DPN 5968

Title : मंगलास्तव तुत: MANGALĀSTAVA TUTAH

Run. No. 6659 Cat. No. Micro. No.

Subject स्तव स्तोत्र Hymn Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 13×6 Folios 42 Lines (in a page) 4

Compl. / Incompl. Chapt. / act /

Author / translator Scribe / donor फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य Phaṇīndra Ratna Vajrācārya

Date: NS / SS / VS / KS Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. / Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0 cms. 5 10 15 20

पशुपतिदेव वज्राचार्य

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

५९. मंगलास्तव, तुतः

10

5

0 cms. 5 10 15

के पहना,,स्वार्थपदिपवज्ञा॥ दसत्वा॥ ॥ वैज्ञाया
यस्मिवक्रं,वयिनजिनवस्त्र,व्रवनगि)यकृन,,[illegible]
ग्यासुंयिनिव,,ङुयिनद्दिनस्वन,,कोस्वनवोद्वि
गीमथ्याबावनाला,,ञनवगनमिंन,मिंकृ[illegible]
यक्रीं॥ दूसत्वाबा॥ ॥ कुनथ्वङबाङ[illegible]

वलनमिनं,गायनामस्कस्रुंङ,,बालाद्धिकृलाकृस॥ मल
ङलवखन,वङंधपानिम्भना,वृथंबाप्रानिदास्य,स्रन्तवगन
न,दोस्यलाम्यविनास॥ ङसत्वा॥ हेकापालिविमरस्य
सस्मगनेवाविअलो॥॥ ❀ ॥॥ मूक॥ हूंनराद्य यनि
नम्हनगनसायनमा॥ गरुवदनमविलीन्द्रिकृ
दनन्निन,विदिदगमस्यवृक्तनलाङ्ग्यलानं,अव

७

सवत्रस्य पूज्यलगात भुवनं जगत्रयी॥ पञ्चवनि सूत
मिश्रीविग्नलाऽउँ मासि॥ह॥ऊँ वां॥ ॥सिवनैन
मवतिसं स्तनवकल्याणमूर्ति पदसूदसनदर्श
साकिनिमादकेन॥ऊँ नंदसमसालाकारनेक्ष
दलीव ममहृदयनिवासी भगवदसनमामि॥८॥

॥ ॥विमलकनकवर्णं पूर्णलक्ष्मीप्रकाशं गङ्गमुख्या
तु नाकष्टवल्लकत्रयुगं॥ ऊँ ह्याबलदर्श
सपासाकृष्ट्यै निवसितगन्तसि भगवदसंनमा
मि॥ ॥निगमशिखरवाद्यसंविदानंदरूपं
वकिनि बृन्दमन्त्र॥ गतिमूनि दर्शदन्दलिङ्ग

दस्रिदत्रानीक्षिधिनिभुत्र [illegible] कात्री गाजदस्विसनि
वाषेग्गा गद सनमामिदं॥ ॥विवृधमस्वदनि
लवर्पकासाथेकाषे॥ नसव त्रद विचेत्र [illegible] चमा
त्रर्पधित्री॥ भनमदहूपदा [illegible] विगृकेतेकि पारि
सकत्नस्नाय त्राली मिगदसेनमा [illegible] नि हूक

[illegible] हयमा [illegible]
कुमालषेहितानात्रदपातगौसपधकेसमाक॥ [illegible]
[illegible] नमा॥

10
5
0 cms.
5
10
15

10

5

0 cms. 5 10 15

ॐ॥ नमबुधायनमधमाय ङ्घः॥
ॐ नमबुधाय॥ ॐ नहिकुसुमसंकाश॥
दक्षाः पुर्वमुरवदिवदालवर

१ॐ नम बुद्धाय ॥ अनन्तसिद्धसुगतसर्वं कायश्रे
ष्ठः पूर्वमुखविजयधारासनं २ दृजधानन्दं
विनिर्जितं नमामि श्रीमञ्जुघोषम् इति ॥ ॥
सुगतसुतजनमनोबोधिं ध्वजदक्षिणतन
जगाकस्तं कः वितवयपदधायकं २३ आदि

गेँनमामागामँह्रगीगाकना भयविनिनवन
मकूनँहँवनूवाःरसमामेँत्रियावँसयानि
गुल्वेवँनहिँनाःलाह्नजारुडयाचागावृद्धवँनो
चनारुँनिस्रवँननामिनाँरुगनिस्यँद्वदवा।

उक्तासगाहिमाद्दँकानवरपगुपानिँदमको
वतघद्धनरहक्तापिठाहाजाह्नचाताँलिपु
गनमयनाःठाचिँनाँलामहात्माःऋक्तासँनव
करूधनिँठाँतिनवसँःगंधहस्कृतमालीःऊक्ता

ह्मगा २ गाम्हँ घँ ञ लोकवन्धुगुनगस्लह्निदया
वाधिविंनाम्हविं ट४ बुद्धाम्हाँ निड नाशा विदि
नारिनगु नास र्वं सत्वानु कँ पा. गु स्वाहग ३गा
य ह्लावंस्ह्व नाना. ट ग नु ह स्ह्कु री ह्लानसँ

हायहलनाम्हा निचिंमाल म्हाल्हा. म्हकलहल
हलायिनवंस्कृत्रिव क्वाम्हा यूनिंमा माकिंन
क्वपिंनानि पुगना. पान्दु नालाचनाथ्वे. गु स्वा
हग ४ गामम्ह्वमानिस्तांगुनिजगुरनहिनस्वा

ह्वेङ पागस कूस ग्र.वा नासिव हल क्षा.ग्रु सिह्
नगुघ नाः धर्म्म षा न स्व नी च क यूसि ज्ञा न गु
घ नाः ब्व हनहि न कत्ता ह्वङ पासा वलि जऊ
ह्मासंवा ग वाविघ्ना मात्यां ह्व ईव गा नाउ नि

नारिन वृलँ सा चलिघु पवस्ता वँ नालि घँ य
वहृ पहासि न न द ना ह्व ऊ न ह्मँ य्यिमा जा ७ न
स्मीव्रु घह्य वीथि सकल रुप हजा सा जा चे थू
पव शा ऊ ह्मा स गा ॥ ५ ॥ वर्ष सा ला न्या धर्म्म प ऊ

पुनि नाहिनि वर्ले पर्व्विन गद्धक्र नं अवद्याँ
सुविंनि वक्षःपि नां हिनद्धव र्नः कोध्वं नवाधि
वृक्षे श्री मस्त्यदावमा नामु नवनमिर्न्धी रुली
सींषचंवों रुस्तास ॥ १ ॥ हँकु प्र ध्वं रू वा दायमी ध

रुवलनमिर्नं लावनामरू सर्ध्ये वानाहि पूनं कूँ
ह मूनि वलवजनं वहघ्प्सनि थ्वानावूथ्वा
नाँप्रानि लास्यगु नंवननमि नं हास्य चास्य
विचास्य रुस्तास ॥ ८ ॥ गुं रांस वनेल ८१ ॥

0 cms. 5 10 15

॥ॐ नमो लोकभगवनाय॥ ॥सलू
नवलू न र्फ ह्रसं चसिन्ह संह वं दे
हि न के न व ल वा म कः म ल धन॥१॥
श्री वृगमण्ग नव्हह यं भ पा ना स त्व ज

धा न न दृ र्गति ह न न॥ कगति का
न न मो कृ यु पा ना॥२॥सुमि तां द
सि नैं ध नि र्मल व द नं॥ श्री ह य लो
क स न स्ह न न न यू क्षि॥ श्री वृ ग

[illegible]

0 cms.
5
10
15
5
10

0 cms.
5
10
15

10
5
0 cms.
5
10
15

मंगलास्तवं, तुर्ते...

फरणीकुरत्न वज्राचार्य

श्रीजिन॰ वीस्वहन वीस्वहन॰ यंय
मूनूतिरतु स्नुन्दि यानगहगति
जिनुमानसादेलतहयतिमिव॰ध
नर्यो वनूर्य॥ ॥ज्ञानवदन स्नुया
उवदि वं॰ लाउ वदि वविज्ञानु ध्यो

नेरस्वस्नलाउ यदियं ऋउवि दिगह
ज्ञान॰ वाउवन्दिय श्री बंनुयवन्॥ ॥
च्छिवद वव प्राबियानगवृछिलयाचिय
सुवकत्रुक्तीदनवृंबियागरुवबवाउ
जिविय॰ स्नायतवक्राम निक्वनुस्निविनि

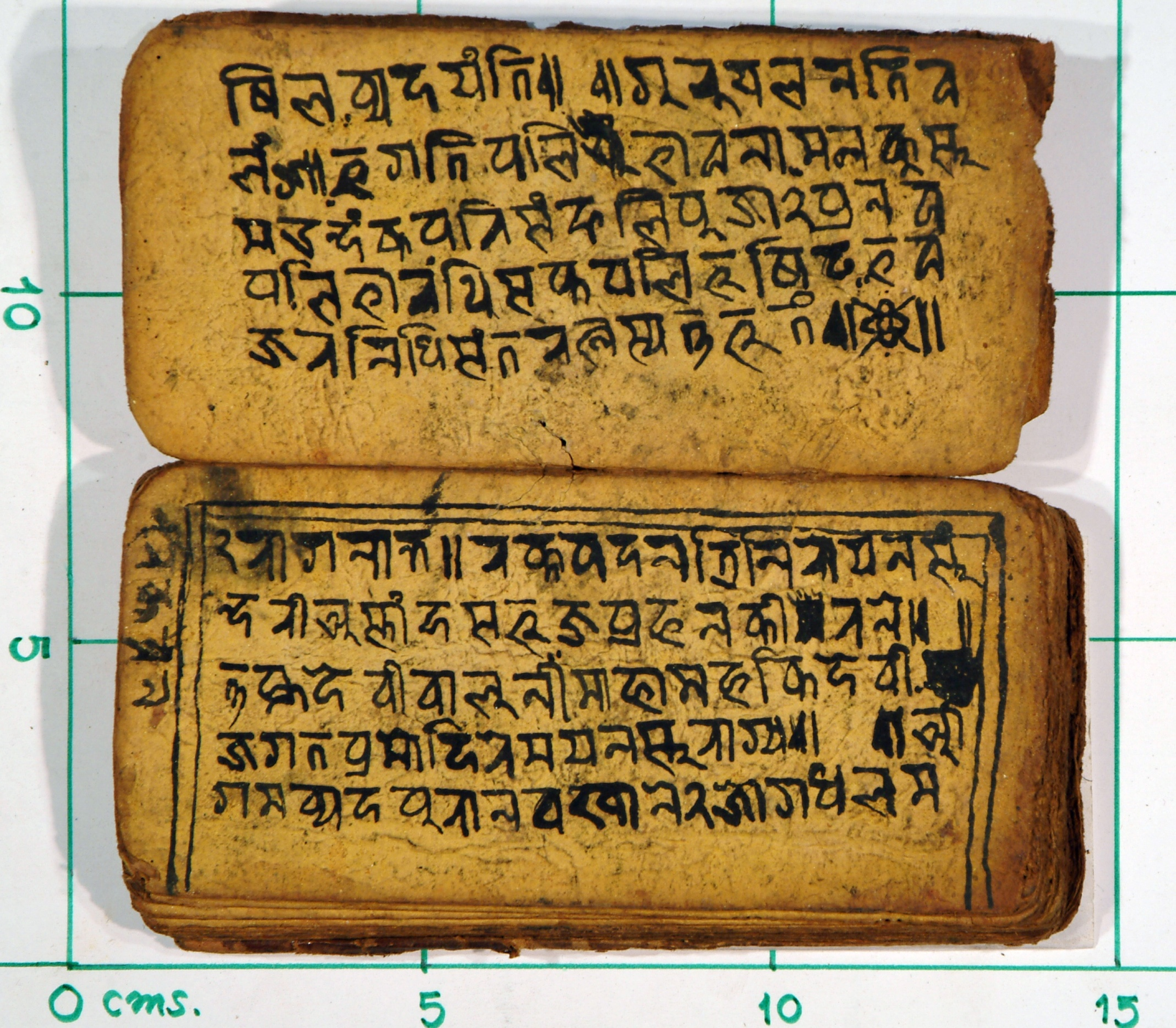
0 cms.
5
10
15

दि ङ्गा गू ड प द स्य ॥ ॥ वं ङ्कु पू ढू स्य र

रू प ङ ड ङ्कु र स या र अ गि नि मा ज्य हे रू ॥

ड हे रू ब ॥ ॥ ह्न न स रू य र न हि र गं न्त्व

रि या र हे न यि ग्रा का कु प ड स्त्र ना स्य र वि

॥ ⊗ ॥ ना गा है र बी ॥ न मो ढूं रू का रू न रु

प ष रू ॥ ॥ स्यु कु बी सु त्वे ड ना ष रू ॥ ॥

हि ना हे है हि ना हे है हि ना हि हि हे हे हे ॥ ॥ हैं

ज्रा ज्या लिं ग न कु ग घ रू र व ज दे ल्ल म का ष

रू ॥ ॥ घ र र स्त्र सं स्व न द ह धि रू र स र

हूं लु स्त्र हि य बं ल्ल म रू ॥ ॥ मा यो क ह

त्रि न उं गूर स्वाहि य क त्र ना स त्व म द्दे ॥

१ ॐ ॥ त ग बा न गध्य न का जस्यम हो नो इवस्य

गि य ते न ॐ य ता सिं ह नि वा धा ः

१ अथ व कुंथलासीसीं दं[illegible]पं न द म कौ
प ने [illegible] गं लोक्क वि क वि क गु देला
गुलिस[illegible]

8 [illegible]

9

10

5

0 cms. 5 10 15

10
5
0 cms.
5
10
15

0 cms.
5
10
15
10
5

0 cms.
5
10
15
5
10